विचार बिन्दु

अविश्वास आदमी की प्रवृत्ति को जितना बिगाड़ता है, विश्वास उतना ही बनाता है। –धर्मवीर भारती

यह देश है ठगने वालों का.....

वर्ष 1957 में एक फिल्म आई थी 'नया दौर'। यह फिल्म काफी प्रसिद्ध हुई और हिट भी हुई। इस फिल्म में एक गाना था "यह देश है वीर जवानों का, अलबेलों का मस्तानों का......"। यह फिल्म स्वतंत्रता के 10 वर्ष बाद बनी थी और समय पूरे देशवासियों में एक नए उत्साह का संचार हो रहा था और वे सभी स्वतंत्र भारत में अपने सुनहले भविष्य की ओर देख रहे थे। इसीलिए समय इस फिल्म का नाम भी नया दौर रखा गया।

अब जबकि स्वतंत्र हुए हमें 77 वर्ष हो चुके हैं, और इस फिल्म को रिलीज हुए भी 67 वर्ष हो गए हैं, यदि आज इसी तर्ज पर किसी गीतकार को गीत लिखना होता, तो उसके बोल कुछ इस प्रकार के होते, "यह देश है ठगने वालों का........"।

ऐसा क्यों कहा जा रहा है, यह समझना उपयुक्त होगा।

सबसे पहले तो यह स्पष्ट करना आवश्यक है की चोरी, डाका और ठगी एक समान समान नहीं हैं। चोरी जहां व्यक्ति की अनुपस्थिति में और जानकारी के बिना की जाती है वहीं डाका खुलेआम डरा-धमका कर डाला जाता है, जबकि ठगने वाला व्यक्ति ऐसा व्यवहार करता है जैसे वह किसी की भलाई का काम कर रहा है किंतु वास्तव में वह जिसकी भलाई का दावा करता है, वास्तव में उसी को क्षति पहुंचाने का काम करता है। इस प्रकार के कृत्य को ठगी कहा जाता है।

प्रतिदिन हम समाचार पत्रों में पढ़ते हैं कि कैसे भोले भाले लोग अनेक प्रकार से ठगे जा रहे हैं। आधुनिकतम तकनीक एवं डीजीटल प्रगति ने, साधारण नागरिकों को ठगने का एक अच्छा माध्यम उपलब्ध करा दिया है। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं कि कैसे ई-कॉमर्स वाली कंपनियां लोगों को खराब समान देकर ठग रही हैं। विदेशी पर्यटक महंगे रत्न खरीद कर ले जाते हैं और बाद में पता लगता है कि उन्हें साधारण पत्थर दे दिए। ऐसी अनेक शिकायतें मुझे निदेशक, पर्यटन के रूप में मिलती थीं।

अनेक महिलाएं उन व्यक्तियों के द्वारा ठगी गई हैं, जिन्होंने उनके स्वर्ण आभूषणों को चमकाने का दावा किया था और इसी प्रक्रिया में वह आभूषणों में से काफी सोना निकाल कर ले गए।

आजकल तो आपके पास किसी मेल अथवा मैसेज में प्राप्त लिंक पर क्लिक करते ही आपके बैंक से सारा पैसा निकल सकता है। 'वीडियो अरेस्ट' का एक नया तरीका ढूंढा है ठगों ने। इसके माध्यम से लच्छेदार बातों से इस प्रकार का वातावरण बना देते हैं कि जिसे ठगा जा रहा है वह जाकर भी उस प्रक्रिया से अलग नहीं हो सकता। यह सब तो तब है जबकि तकनीकी प्रगति बहुत तेज गति से हुई है। पहले तो केवल निरक्षर और गांव के लोग ही ठगे जाते थे, किंतु अब तो ऐसे भी कई लोग ठगे गए हैं जो उच्च प्रशासनिक और पुलिस पदों पर हैं। साइबर ठगी के लगभग 70000 के मामले प्रतिवर्ष दर्ज हो रहे हैं। इससे कई गुना अधिक ऐसे मामले हैं जो पुलिस में दर्ज होते ही नहीं, क्योंकि जो ठगे जाते हैं उन्हें तो यह भी नहीं पता कि, किस प्रकार से ठगी के दुश्चक्र से बाहर निकलना है।

ठगने के इस धंधे में केवल निजी लोग ही लगे हों, ऐसा नहीं है। सरकार भी जनता को ठगने में पीछे नहीं है। यह कहना गलत नहीं होगा कि जनता सत्ता के हाथों ही सबसे अधिक ठगी जा रही है। जब चुनाव के दौरान राजनीतिक दल प्रचार करते हैं तो विभिन्न प्रकार के लुभावने नारे लगाते हैं किंतु वास्तविकता तब पता चलती है जब मतदाता उसे जिता देता है। वे उसका शोषण, पहले से भी अधिक करने के उपक्रम में लग जाते हैं।

प्रत्येक क्षेत्र, जिससे सामान्य जन का वास्ता पड़ता है, वहां लगभग प्रतिदिन वह ठगा जा रहा है। उसे शायद नहीं पता कि जो वायु, सांस के रूप में प्रतिक्षण लेता है उससे कितने हानिकारक तत्व उसके शरीर में प्रवेश कर रहे हैं। यह उसे तभी पता लगता है जब वह कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो जाय। यह सब उस विभाग की मिलीभगत के कारण जिसे प्रदूषण नियंत्रण की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

बीमारी के इलाज के लिए अस्पताल में जाएं तो वहां डॉक्टरी जैसे पवित्र व्यवसाय करने वाले भी मरीज को ठगने के लिए तैयार रहते हैं। इसके लिए वह चाहे अनावश्यक जांचें करवाएं अथवा महंगी दवाइयां लिखें, क्योंकि इन दोनों से ही उसे अपने हिस्से की राशि तो कमीशन के रूप में प्राप्त होनी ही है।

हाल ही में जब नकली दवाइयां का जखीरा पकड़ा गया तो जिस निर्माता का नाम उन दवाइयां के पैकेजिंग पर लिखा गया था, उसने तो यह कहकर अपना पल्ला झाड़ लिया कि ये दवाइयां उसके द्वारा बनाई ही नहीं गई है। अब उस आम व्यक्ति का क्या होगा, जिसने यह दवाइयां किसी अच्छी प्रतिष्ठित कंपनी की समझ कर खरीद लीं। आज तक किसी दवा विक्रेता या स्टॉकिस्ट को नकली दवाएं बेचने के आरोप में सजा हुई हो, ऐसा पढ़ने और देखने में नहीं आया है। इसका कोई आंकड़ा उपलब्ध नहीं है कि नकली दवाएं लेने के कारण और गलत जांच होने के कारण कितने लोग न केवल आर्थिक रूप से अपितु शारीरिक रूप से भी कष्ट से गुजरने को मजबूर हुए हैं।

आजकल, सरकारी नौकरी के लिए चयन करने वाली संस्थाएं, जैसे लोक सेवा आयोग, कर्मचारी चयन आयोग भी बेरोजगार लोगों को ठगने में पीछे नहीं हैं। करोड़ों रुपए की फीस वसूल करने के बाद भी वे यह सुनिश्चित नहीं कर पाते कि पूरी ईमानदारी के साथ भर्ती परीक्षा आयोजित हो जाए और योग्यतम अभ्यर्थी चयनित होकर सरकारी नौकरी में आए। एक यही काम संस्थाओं को सोपा गया था और वह भी यह नहीं कर पाए हैं या जानबूझकर ऐसा काम कर रहे हैं, ताकि वे बेरोजगारों को ठग कर, लाखों करोड़ों रुपए कमा सकें।

सही बात तो यह है कि हम में से प्रत्येक, प्रतिदिन किसी न किसी प्रकार की ठगी का शिकार हो रहा है, कभी जाने में, कभी अनजाने में। इससे उबरने का कोई रास्ता फिलहाल तो नजर नहीं आ रहा है। देखना है, क्या कोई सरकार या नागरिक संगठन, इस दिशा में कोई प्रभावी कार्रवाई करके, देश के नागरिकों को ठगी का शिकार होने से बचाने में सफल हो पाता है या नहीं?

सरकार प्रत्येक वाहन पर, खरीदने के समय ही, रोड टैक्स वसूल कर लेती है, किंतु उसके बाद टोल टैक्स के नाम से बहुत बड़ी राशि अनिश्चित काल तक वसूल करती रहती है। यह देखा गया है कि सड़क बनाने में लगी राशि पूरी वसूल करने के बाद भी टोल टैक्स की वसूली लगातार चलती रहती है। यह एक प्रकार की सरकारी ठगी ही तो है।आधुनिक प्रकार की ठगी में तो ठगे जाने वाला समझ भी नहीं पाता कि उसे ठगा गया है। कई बार ठगने की कार्रवाई को कानूनी जामा तक सरकार द्वारा पहना दिया जाता है।

वकीलों का काम अपने मुवक्किलों को न्यायालय के माध्यम से जल्द से जल्द न्याय दिलाने का होता है। किंतु वे लंबे समय पर केवल तारीख लेने का ही काम करते हैं। लगभग आधे प्रकरणों में सरकार एक पक्षकार होती है। सरकारी वकील, सरकार के पक्ष में अपनी योग्यता का उपयोग करने के बजाय विपक्षी-निजी पक्षकार के हित में काम करने लगते हैं। इसी कारण सरकार अधिकतर प्रकरणों में हार जाती है।

खाद्य सामग्री बेचने वाले या फल बेचने वाले अनेक प्रकार के रसायनों का उपयोग करते हैं ताकि फल एवं सब्जी अधिक आकर्षक लगें या फिर समय से पहले उन्हें पका लिया जाय। दोनों ही मामलों में, कुल मिलाकर इस ठग प्रवृत्ति का शिकार तो आम नागरिक को ही होना पड़ता है। यह सब केवल इसलिए है कि आम नागरिक को मूर्ख बनाकर उसे ठगा जाए और नागरिक यह समझ ही नहीं पाए कि उसे किस प्रकार से ठगा जा रहा है।

वर्तमान में, पूरे देश में जो व्यापार सबसे अधिक फल फूल रहा है वह है ठगने का। बिल्डर आपको फ़्लैट बेचते समय यह कहेगा कि इतना सुपर बिल्ट अप एरिया और कारपेट एरिया है, किंतु जब आप फ्लैट का कब्जा लेने जाएंगे तो स्थिति बिल्कुल अलग मिलती है। आवासीय भवन के नाम पर आपको फ्लैट बेचे जाएंगे, लेकिन इस भवन में कई प्रकार की व्यावसायिक गतिविधियों के लिए भी बिल्डर पैसे लेकर कुछ क्षेत्र बेच देते हैं। इसके कारण आवासियों को कई प्रकार की असुविधा झेलनी पड़ती हैं।

ठगे जाने का सिलसिला लगभग सभी विभागों एवं सभी क्षेत्रों में पूरी तरह व्याप्त हो चुका है।

खिलाड़ी चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, जब तक वह खेल संघ के पदाधिकारी की चापलूसी नहीं कर सके अथवा उनके गलत इरादों में उनका सहयोग देने के लिए तैयार ना हो जाए तो फिर उसका राष्ट्रीय टीम में चयन होना लगभग असंभव है।क्या इस प्रकार के चयन के परिणाम स्वरूप, जो प्रतिभाशाली खिलाड़ी अपने देश के लिए खेलने से वंचित रह गए, वे अपने आप को ठगा महसूस नहीं करेंगे? जब भी किसी ने इसके खिलाफ आवाज उठाई, उसे किसी न किसी प्रकार से दबाया गया है, ताकि अन्य लोग भी इस प्रकार की ठगी को चुपचाप सहन करते रहें और उसके विरुद्ध कोई आवाज उठाने का साहस तक न करें।

कहा जाता है, ठग ही जाने, ठग की भाषा। लगता है ठगने की प्रतिस्पर्धा हो रही है कि के ठगने की कला में कौन कितना सिद्ध है? जो जितना पारंगत है उतना ही वह दूसरे को ठगने में लगा हुआ है। ठगने में पाखंडी बाबाओ की कोई कमी नहीं है। ये विभिन्न प्रकार की गंभीर बीमारियों का शर्तिया इलाज करने का दावा करते हैं और भोली जनता उनके मार्केटिंग के जाल में फंस कर ठगी का शिकार हो जाती है। कई बार तो ये ठग, महिलाओं का यौन शोषण करने से भी नहीं चूकते। हमारे एक निकट परिचित ने अभी हाल ही में एक बड़ी धनराशि किसी तथा कथित आयुर्वेद विशेषज्ञ के हवाले कर दी, जबकि उन्होंने किसी प्रकार की न तो कोई रसीद दी एवं न उन्होंने यह बताया कि वह किस प्रकार की दवाएं उनको दे रहे हैं। जब उनसे इस बारे में प्रश्न किया गया तो उन्होंने यहां तक कहा कि वह भगवान हैं और भगवान से कोई प्रश्न नहीं किया जा सकता। ऐसे व्यक्ति, अंध भक्ति के कारण खूब फल फूल रहे हैं। स्पष्ट है, ठगने के व्यापार में सभी लोग एक-दूसरे के सहायक की भूमिका निभा रहे हैं। सरकार की कोप दृष्टि इन पर कभी नहीं पड़ती क्योंकि यह सरकार के अधिकारियों की मिलीभगत से ही ऐसा करने में सफल होते हैं।

मैंने बहुत विचार किया कि कोई तो ऐसा क्षेत्र होगा जहां लोग ठगी से बचे हुए हैं, किंतु ऐसा कोई क्षेत्र दिखाई नहीं देता।

सरकार की लगभग सारी योजनाएं कुछ लोगों के द्वारा ठगी करने के कारण दलालों की बलि चढ़ गई है। हाल ही में समाचार पत्रों में यह प्रकाशित हुआ है कि कैसे अनेक वृद्ध व्यक्तियों को मिल रही पेंशन उन्हें मृत घोषित करते हुए बंद कर दी गई, जब कि वे जीवित हैं। इसी प्रकार हजारों लोगों को राज्य से पलायन करना बता कर उनकी पेंशन बंद कर दी गई। मीडिया में ऐसे पीड़ित लोगों के नाम, फोटो के साथ प्रकाशित हुए हैं। इसके बावजूद ऐसा लगता नहीं है कि, जिस अधिकारी के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई, उसके विरुद्ध कार्रवाई करके उसे नौकरी से निकाल दिया जाएगा। जवाबदेही की कमी के कारण ही ठगने का कारोबार तेजी से बढ़ रह रहा है।

सही बात तो यह है कि हम में से प्रत्येक, प्रतिदिन किसी न किसी प्रकार की ठगी का शिकार हो रहा है, कभी जाने में, कभी अनजाने में। इससे उबरने का कोई रास्ता फिलहाल तो नजर नहीं आ रहा है। देखना है, क्या कोई सरकार या नागरिक संगठन, इस दिशा में कोई प्रभावी कार्रवाई करके, देश के नागरिकों को ठगी का शिकार होने से बचाने में सफल हो पाता है या नहीं? अभी तो जिन नियामक संस्थाओं के ऊपर ठगी से बचाने की जिम्मेदारी है, वही इसे बढ़ाने में लगी हुई प्रतीत होती हैं जैसे सेबी, बीमा नियामक अधिकरण, आदि आदि।

आइए, हम सब मिलकर देश को इस ठग संस्कृति से बाहर निकालने में एकजुट होकर प्रयास करें ताकि देश वासियों की गाढ़ी कमाई का पैसा बर्बाद होने से बचाया जा सके। यदि ऐसा हो सका तो हमें यह नहीं कहना पड़ेगा "यह देश है ठगने वालों का........"

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

प्रजातांत्रिक प्रधान : कुछ बातें जो भूलनी नहीं चाहिए

डॉ. रामावतार शर्मा

यदि इतिहास के उस दौर पर एक नजर डाली जाए जब अमेरिका में गृहयुद्ध हुआ, क्रांति हुई और वहां के सेनापति जॉर्ज वाशिंगटन नव उदित देश के पहले राष्ट्रपति बने, उस समय जॉर्ज वाशिंगटन एक अति प्रिय और बड़े ताकतवर नेता थे परंतु देश में प्रजातंत्र स्थापित होते ही उन्होंने अमेरिका की सेना के कमांडर इन चीफ के पद से त्यागपत्र दे दिया। उस काल के हिसाब से वे राष्ट्रपति एवं सेना प्रमुख दोनों पदों पर बने रह सकते थे परंतु फिर भी उन्होंने एक अति प्रभावशाली पद का त्याग किया जिसे देख कर उनके प्रबल विरोधी किंग जॉर्ज तृतीय ने कहा था कि वाशिंगटन ने ऐसा करके बता दिया है कि वह इस समय के महानतम व्यक्ति हैं। अपने राष्ट्रपति काल के दूसरे दौर में वाशिंगटन ने इस पद से भी त्यागपत्र दे दिया ताकि कोई व्यक्ति दो बार से अधिक अमेरिका का राष्ट्रपति नहीं बन सके, तानाशाह न बन पाए और जनता का मत ही सर्वोपरि रहे। त्यागपत्र के बारे में उनका कहना था कि यदि पद पर बने रहने के दौरान उनकी मृत्यु हो जाती है तो भविष्य में कोई अति प्रभावशाली व्यक्ति अपने आप को जीवनपर्यंत के लिए राष्ट्रपति घोषित कर सकता है। वाशिंगटन के ऐसा करने के बाद ही अमेरिका में एक व्यक्ति के लिए राष्ट्रपति पद को दो बार के लिए सीमित किया गया। वाशिंगटन बहुत ही लोकप्रिय कमांडर इन चीफ और राष्ट्रपति थे और उस समय चाहते तो आसानी से अपने आप को जीवनपर्यंत के लिए राष्ट्रपति घोषित कर सकते थे परंतु उन्होंने स्वेच्छा से पद त्याग कर जनता को सर्वोच्च रखा और अपने परिवार से कहा ;आओ, अब घर चलते हैं। ;

जॉर्ज वाशिंगटन के बाद 44 और लोग अमेरिकी राष्ट्रपति पद पर आए और उन्हीं की प्रेरणा के फलस्वरूप सब ने अपने चार या आठ साल के कार्यकाल के बाद सत्ता वापिस जनता के हाथों में संभला दी, सिर्फ एक व्यक्ति के कुत्सित प्रयास को छोड़ कर और उस व्यक्ति का नाम डोनाल्ड ट्रंप है। ट्रंप अपने पिछले लोकतंत्र विरोधी प्रयास में असफल होने के बाद फिर से सत्ता को अपने हाथ में लेने को उत्सुक है परन्तु इस बार यह प्रयास जनता के हाथ से प्राप्त करने का प्रयत्न है। देखा जाता है कि हर प्रजातांत्रिक देश में जनता का एक अच्छा खासा वर्ग तानाशाही या राजतंत्र का पक्षधर होता है। चूंकि अधिकतर घरों में एक तरह का पिता केंद्रित निरंकुश तंत्र कार्य करता है तो जनता का एक बड़ा वर्ग इसी तरह की व्यवस्था देश या राज्य में चाहता है। एक राजनीतिक पार्टी या व्यक्ति के पक्ष में चलने वाली लहर इसी मानसिक सोच की तरफ इशारा करती है। लोकप्रियता वाले नारे, नस्ल या धर्म आधारित राजनीति, बदले की राजनीति और भय का निर्माण आदि किसी भी समाज में प्रजातंत्र को नष्ट करने के सर्व चलित हथियार हैं जिनका चालाक नेता लोग जम कर उपयोग करते हैं। जॉन केली डोनाल्ड ट्रंप के द्वितीय चीफ ऑफ स्टाफ रहे हैं। केली के अनुसार ट्रंप इस बात से पूरी तरह से अनभिज्ञ हैं कि अमेरिका के सामान्य नागरिक की दृष्टि में अमेरिका क्या मायने रखती है, उसकी नजर में अमेरिका कैसा होना चाहिए। ट्रंप का एकमात्र उद्देश्य सत्ता पर कब्जा कर गोरे लोगों का प्रभुत्व कायम करना और सत्ता पर अपनी निरंकुशता बनाना है। देखा गया है कि जो भी लोग सत्ता प्राप्त करने के लिए पागल बने होते हैं वे प्रजातंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा होते हैं। उन लोगों के पद राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, चांसलर, प्रिय नेता आदि कुछ भी हो सकते हैं, वे जनता द्वारा चुने हुए भी हो सकते हैं परंतु सत्ता को अपनी पकड में रखने का उनका स्वभाव पूरे विश्व में एक जैसा होता है और वे सभी राष्ट्रीय स्वाभिमान, धार्मिक तथा सांस्कृतिक सर्वोच्चता, नस्लवाद और किसी संभावित खतरे जैसे हथियारों का उपयोग कर सदैव के लिए सत्ता अपने पास रखने में प्रयत्नशील रहते हैं। ये लोग किसी भी स्थिति में जॉर्ज वाशिंगटन की तरह नहीं कहेंगे कि मैने मेरा सर्वोत्तम मेरे देश के लिए दे दिया है और अब समय आ गया कि वापिस घर चला जाए।

कोई भी शासक कितना ही बुद्धिमान हो परंतु वह आठ या दस वर्ष के बाद सिर्फ एक ढर्रे पर चलने लगता है। सत्ता के शिखर का अकेलापन उसमें नए विचार, नए दर्शन को विकसित नहीं होने देता है। एक परोक्ष एवं आंतरिक सत्ता संघर्ष उसकी ऊर्जा को सत्ता में बने रहने के प्रयत्नों में नष्ट करने लगता है जो उसकी सोच में नयापन नहीं आने देता। सत्ता के शिखर पर, इसलिए, किसी भी व्यक्ति को दस वर्ष के बाद नहीं बने रहना चाहिए। एक पार्टी भले ही कई साल सत्ता में बनी रहे पर उसके नेतृत्व में परिवर्तन देश और स्वयं उस पार्टी के लिए शायद एक बेहतर विकल्प होता है। जिस भी राजनीतिक ढांचे में एक ही व्यक्ति, परिवार या परंपरा का वर्चस्व बना रहता है वह ढांचा एक समय के बाद कमजोर हो कर बिखर जाता है। परंतु सत्ता का मोह ऐसा होता है कि एक व्यक्ति तो सत्ता से चिपका रहना ही चाहता है, पार्टी में भी विकल्प ढूंढने की हिम्मत नहीं होती है। भय और सत्ता प्रेम से उपजी यह मानसिकता देश में नवीनता नहीं लाने देती है और इसी के कारण हर अति प्रभावशाली देश और साम्राज्य एक समय के बाद बिखर जाता है। रोमन तथा ओटोमन साम्राज्य इसी मानसिकता के शिकार हुए थे और आज अमेरिका का घटता वैश्विक प्रभाव भी उसके आने वाले ह्रास को इंगित कर रहा है क्योंकि वहां अब अधिकतर नेता वयोवृद्ध उम्र के होने लगे हैं। दुनिया से प्रजातांत्रिक देशों के नागरिकों को भी अपने सोच में नवीनता लानी पड़ेगी वरना हर प्रजातंत्र एक भ्रष्ट तंत्र का रूप ले लेगा और परोक्ष निरंकुशता कितने ही नागरिकों से उनके जीने का अधिकार छीन लेगी। इस स्थिति का एक अन्य खतरनाक पहलू समाजों का विघटन भी है जहां छोटी मानसिकता के लोग सोशल मीडिया द्वारा जाति आधारित द्वेष फैलाने में सफल हो जाएंगे क्योंकि उनकी नजर में राजनीतिक और सामाजिक ऊंचाइयों पर चढ़ने के लिए यह सबसे आसान मार्ग है।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

प्रदेश के अन्य जिलों में भी लागू किया जाएगा बाड़मेर मॉडल : मंत्री के.के.बिश्नोई

■ वेब पोर्टल की शुरूआत होने से दिव्यांग अपने घर से आनलाइन सुविधाओं का फायदा ले सकेंगे।

बाड़मेर, (निसं)। जन कल्याणकारी योजनाओं से कोई भी दिव्यांगजन वंचित नहीं रहें। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री भजनलाल ने दिव्यांगजनों के लिए कई योजनाएं लागू की है। बाड़मेर जिला प्रशासन से उसी दिशा में पहल करते हुए जन कल्याणकारी योजनाओं की धरातल पर क्रियान्विति का सराहनीय कार्य किया है। इसकी बदौलत दीपावली से पहले दिव्यांगजनों को खुशियों की सौगात मिली है। उद्योग एवं वाणिज्य राज्य मंत्री के.के.विश्नोई ने सोमवार को बाड़मेर जिला मुख्यालय पर आदर्श स्टेडियम में आयोजित दिव्यांग सहायक अंग उपकरण वितरण कार्यक्रम के दौरान यह बात कही।

उद्योग एवं वाणिज्य राज्यमंत्री के.के.विश्नोई ने कहा कि दिव्यांगजनों के जीवन को सशक्त करने की दिशा में राज्य सरकार संकल्पबद्ध है। उनके कल्याण के लिए कई योजनाएं लागू की गई है। इनका लाभ राज्य के प्रत्येक दिव्यांगजन तक पहुंच सके, इसके लिए राज्य सरकार निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने बाडमेर जिला प्रशासन की अभिनव पहल की सराहना करते हुए कहा कि प्रदेश के अन्य जिलों में बाडमेर मॉडल को लागू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार विशेष योग्यजनों को आत्म-सम्मान के साथ जीवन सशक्त करने तथा राज्य की प्रगति में योगदान करने के लिए विभिन्न योजनाएं संचालित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वेब पोर्टल की शुरूआत होने से दिव्यांग अपने घर से आनलाइन सुविधाओं का फायदा ले सकेंगे। उन्होंने एक ही स्थान पर समुचित जानकारी मिल सकेगी। इस दौरान उद्योग एवं वाणिज्य राज्य मंत्री के.के.विश्नोई, शिव विधायक रविन्द्रसिंह भाटी, जिला कलैक्टर टीना डाबी, सभापति दिलीप माली, प्रधान रूपाराम सारण, समाजसेवी दीपक क?वासरा, रमेश शर्मा, प्रतिपक्ष नेता पृथ्वी चंडक, लक्ष्मण वडेरा, भामाशाह एवं उद्यमी किशोरसिंह कानोड, रमेशसिंह इंदा, राजूदास भील ने दिव्यांगजनों को ट्राइसाइकिलें एवं सहायक उपकरण वितरित किए। इस दौरान जिला कलैक्टर टीना डाबी ने कहा कि अक्टूबर माह में बाडमेर जिला प्रशासन ने उपखंड स्तर पर दिव्यांगजन शिविरों के आयोजन करने के साथ उनको जन कल्याणकारी योजनाओं से लाभांवित करने का कार्य किया। उन्होंने कहा कि दिव्यांगजनों को किसी तरह की असुविधा नहीं हो, इसके लिए जिला स्तर से मेडिकल बोर्ड का गठन करते हुए उनको दिव्यांगजन शिविर में भेजा गया। इससे दिव्यांगजनों को खासी सहुलियत हुई। उन्होंने कहा कि इस अभियान के दौरान 7 हजार व्यक्तियों का पंजीयन करते हुए 2031 पात्र दिव्यांगजनों के दिव्यांग प्रमाण पत्र अनुमोदित किए गए। इसके अलावा सरकारी कार्यालयों का दिव्यांग फ्रेंडली होने संबंधित ऑडिट करवाया गया है। जिला कलैक्टर टीना डाबी ने कहा कि बाडमेर मॉडल को राज्य सरकार पूरे प्रदेश में लागू करने पर विचार कर रही है। उन्होंने कहा कि आगामी समय में द्वितीय चरण के दौरान दिव्यांगजनों को बेहतरीन सुविधाएं मुहैया कराने का प्रयास किया जाएगा। नगर परिषद सभापति दिलीप माली ने कहा कि दिव्यांगजन का आत्मबल बढ़ाने एवं उनको समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए राज्य सरकार ने सराहनीय कार्य किया है। समाजसेवी रमेश शर्मा ने कहा कि आमजन दिव्यांगजन की हरसंभव मदद करने के लिए आगे आएं। उन्होंने दिव्यांगजनों को हिम्मत के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम कां संचालन प्रोफेसर डॉ. मुकेश पचौरी ने किया।

जिला स्तरीय कार्यक्रम के दौरान अतिरिक्त जिला कलक्टर राजेन्द्रसिंह चांदावत, यूआईटी सचिव श्रवणसिंह राजावत, उपखंड अधिकारी वीरमाराम, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उप निदेशक सुरेन्द्रप्रतापसिंह भाटी, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी मूरलीधर यादव, कृष्णसिंह राणीगांव, भगवान बारूपाल, जिला उद्योग केन्द्र के महाप्रबंधक अनंत आर्य, विकास अधिकारी औंकारदान समेत विभिन्न जन प्रतिनिधिगण, प्रशासनिक अधिकारी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

दिव्यांगजनों को वितरित किए सहायक उपकरण : आदर्श स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम के दौरान 112 ट्राई साइकिल, 47 व्हीलचेयर, 34 श्रवण यंत्र, 138 वैशाखी एवं 27 ब्लाइंट स्टीक वितरित की गई।

दिव्यांगों के लिए विशेष पोर्टल लॉच : कार्यक्रम में बाडमेर जिला प्रशासन की ओर से दिव्यांगजनों को समुचित जानकारी उपलब्ध कराने के लिए बनाए गए वेब पोर्टल को लॉच किया गया। जिला कलैक्टर टीना डाबी ने बताया कि इस वेब पोर्टल से दिव्यांगजनों को एक ही स्थान पर सुगम और सुलभ जानकारी उपलब्ध मिल सकेगी। इस पोर्टल पर केन्द्र एवं राज्य सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं, जियो टैगिंग के साथ सार्वजनिक स्थानों की सूची, विशेष रूप से उपलब्ध चिकित्सा सेवाओं, दिव्यांगजनों के अधिकारों एवं कानून के साथ उनको मिलने वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी प्रदर्शित की गई है। जिला स्तरीय कार्यक्रम में नवो बाडमेर समन्वित प्रयास सशक्त समाज अभियान के दौरान बेहतरीन कार्य करने पर सेडवा उपखंड अधिकारी बद्रीनारायण विश्नोई, चौहटन तहसीलदार कृष्णा इंकिया, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उप निदेशक सुरेन्द्र प्रतापसिंह भाटी, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी दिलीपसिंह, महेन्द्रसिंह,डा.कंवराराम, डॉ.महेन्द्रसिंह, डॉ.मोहित कुमार, डॉ.भगवानसिंह ,डॉ.भानुप्रतापसिंह को सम्मानित किया गया। वही ट्राइसाइकिल वितरण करने के दौरान उद्योग एवं वाणिज्य राज्य मंत्री के.के.विश्नोई, जिला कलक्टर टीना डाबी एवं अन्य अतिथियों ने दिव्यांगजनों का माल्यार्पण किया। इस दौरान कई दिव्यांगजनों की आंखों में खुशी के आंसू झलक पडे। शिविर में जिले के विभिन्न स्थानों से पहुंचे दिव्यांगजनों ने बताया कि यह पहला मौका है जब उनका आसानी से दिव्यांग प्रमाण पत्र जारी हुआ।

बीमा कंपनी को नौ फीसदी ब्याज दर से मुआवजा अदा करने के आदेश

■ वाहन दुर्घटना में कार में सवार चार व्यक्तियों की मौत हुई थी

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान उच्च न्यायालय की न्यायाधीश डॉ. नूपुर भाटी ने अपने विस्तृत फैसले में यह प्रतिपादित किया है कि अधिकरण के समक्ष लिखित जवाब के विपरीत जाकर बीमा कंपनी नया तर्क पेश कर मृतक कार चालक की दुर्घटना में लापरवाही नहीं बता सकती। उन्होंने मोटर यान दुर्घटना दावा अधिकरण जोधपुर महानगर द्वारा मुआवजे पर ब्याज दर को 6 फीसदी से बढाकर 9 फीसदी ब्याज दर से भुगतान करने का बीमा कंपनी को निर्देश दिया है।

दरअसल 8 सितम्बर 2014 को हुई वाहन दुर्घटना में कार में सवार चारों व्यक्तियों की मौत हो गई। ट्रक ट्रोला चालक की लापरवाही से हुई टक्कर से मौत की आगोश में समा गए तीन मृतक के दावेदार की ओर से अधिवक्ता अनिल भंडारी ने हाइकोर्ट के समक्ष बहस करते कहा कि अधिकरण ने प्रथम सूचना रपट,चार्जशीट आदि दस्तावेज से सही निष्कर्ष निकाला कि दुर्घटना ट्रक ट्रोला चालक की गलती से हुई है।सो न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी मुआवजे के वास्ते 6 फीसदी ब्याज सहित जवाबदेह है।

अधिवक्ता भंडारी ने कहा कि वर्तमान ब्याज दर को देखते हुए 9 फीसदी ब्याज दिलाया जाएं। इस पर बीमा कंपनी की ओर से प्रार्थना पत्र पेश कर नक्शा मौका पेश कर कहा गया कि कार चालक ने गलत दिशा में आकर सामने से आ रहे ट्रक को टक्कर मारकर दुर्घटना कारीत की है। इसलिए अपील मंजूर कर दावा खारिज किया जाएं। राजस्थान उच्च न्यायालय की न्यायाधीश डॉ नूपुर भाटी ने अपने महत्वपूर्ण फैसले में कहा कि अधिकरण के समक्ष बीमा कंपनी ने यह जवाब दिया कि कोहरे के कारण खड़े ट्रक ट्रोला को कार चालक ने पीछे से आकर टक्कर मारी,लेकिन हाइकोर्ट के समक्ष पेश अपील और बहस में इससे बिलकुल ही विपरीत जाकर यह तर्क कतई माने जाने योग्य नहीं है कि कार चालक ने गलत दिशा में जाकर सामने से आ रहे ट्रक ट्रोला को टक्कर मारी हो।उन्होंने कहा कि बीमा कंपनी अपने जवाब से बाधित है और उन्हें अब विरोधाभाषी तर्क की अनुमति नहीं दी सकती है। उन्होंने कहा कि दावेदारों ने प्रथम सूचना रपट और चार्जशीट से यह साबित किया है कि दुर्घटना ट्रक चालक की लापरवाही और गलती से हुई है,जबकि बीमा कंपनी ने अधिकरण के समक्ष न तो कोई गवाह पेश किया और न ही ट्रक ट्रोला चालक और मालिक को अधिकरण के समक्ष प्रतिपरीक्षण के वास्ते बुलाने का कोई प्रयास किया।उन्होंने कहा कि नक्शा मौका वैसे भी दुर्घटना के 27 घंटे बाद बना है। उन्होंने बीमा कंपनी का अपील के दौरान नक्शा मौका और फोटो को रिकॉर्ड पर लेने के आवेदन को खारिज कर दिया कि उसमें कोई समुचित कारण नहीं बताया गया है। उन्होंने एक दावेदार की ओर से मृतक के आयकर रिटर्न आकलन वर्ष 2012 -13 को मोटर वाहन अधिनियम कल्याणकारी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए रिकॉर्ड पर लेते हुए अधिकरण द्वारा न्यूनतम मजदूरी के हिसाब से तय मुआवजे को वास्तविक आय के अनुरूप मुआवजा राशि निर्धारित की।

राशिफल मंगलवार 29 अक्टूबर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 3:24 तक, ऐन्द्रयन योग प्रातः 7:48 तक, तैतिल करण दिन 10:32 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-तुला, गुरू-वृष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से दिन 10:32 तक है। आज बुध वृश्चिक में रात्रि 10:39 पर प्रवेश करेगा। आज भौम प्रदोष व्रत, धन तेरस, धन त्रयोदशी निमित्त सायं यम दीपदान, धनवंतरी जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:25 से 10:48 तक, लाभ-अमृत 10:48 से 1:34 तक, शुभ 2:57 से 4:20 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:39, सूर्यास्त 5:43

मेष

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष

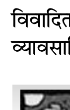

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन

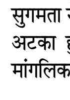

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

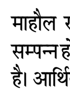

परिवार में शुभ और मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में संयम रखना ठीक रहेगा।

सिंह

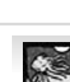

आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। अतिथियों का आगमन रहेगा।

कन्या

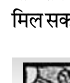

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला

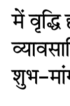

व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृश्चिक

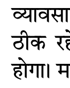

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

मकर

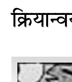

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

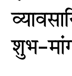

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मीन

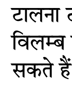

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में मांगलिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।